कुंडलिनी

एक अनकही कथा

KUNDALINI

ओम स्वामी

कुंडलिनी

एक अनकही कथा

KUNDALINI

NOW IN HINDI

ओम स्वामी

जयको पब्लिशिंग हाउस
अहमदाबाद बेंगलोर भोपाल भुबनेस्वर चेन्नई
दिल्ली हैदराबाद कोलकाता लखनऊ मुम्बई

Published by Jaico Publishing House
A-2 Jash Chambers, 7-A Sir Phirozshah Mehta Road
Fort, Mumbai - 400 001
jaicopub@jaicobooks.com
www.jaicobooks.com

© Om Swami

KUNDALINI - AN UNTOLD STORY
कुंडलिनी – एक अनकही कथा
ISBN 978-93-86348-96-8

First Jaico Impression: 2017

Translator: Rachana Bhola 'Yamini'

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without permission in writing from the publishers.

।। ओम श्री मात्रयैः नमः ।।

आपके भीतर बसी दिव्यता को समर्पित

प्रातरुत्थाय सायाह्नं सायाहनात् प्रातर्एव तु,
यत्क्र्ओमि जगन्मातस्त्तद्एव तव पूजनम्.

हे जगन्माता, सुबह के पहले क्षण से अंतिम क्षण तक और संध्या से प्रात तक मैं जो भी करता हूँ। वह सब आप ही की आराधना है।

विषय सूची

यह पुस्तक क्यों?

कुंडलिनी ध्यान की उत्पत्ति

कुंडलिनी — आरंभ

पहला साधक

जागरण

तीन ग्रंथियाँ

शिव व शक्ति का संयोग

देवी का जागरण : वास्तविक साधना

सात चक्रों पर आधिपत्य

मूलाधार चक्र

स्वाधिष्ठान चक्र

मणिपुर चक्र

अनाहत चक्र

विशुद्धि चक्र

आज्ञा चक्र

सहस्रार चक्र

शब्द

पारिभाषिक शब्दावली

यह पुस्तक क्यों?

एक महिला आश्रम में मुझसे भेंट करने आईं। वे चक्रों के विषय में पूरी जानकारी रखती थीं। उनका वास्तु, फेंग शुई और टैरो में पूरा विश्वास था। वास्तव में, यह भी कह सकते हैं कि यही उनके व्यापार के साधन भी थे। उस दिन वे थोड़ी चिंतित थीं क्योंकि एक प्रसिद्ध 'चक्र विशेषज्ञ' ने उनसे कहा था कि उनके चक्र सही ढंग से घूम नहीं रहे और इसी वजह से उनके काम पर बुरा असर पड़ रहा था।

"जी, क्या कहा आपने? फिर से कहिए!" मैंने कहा, "आपके चक्रों का क्या सही नहीं है?"

"स्पिन यानी वे सही तरह से नहीं घूम रहे, मेरे चक्रों का स्पिन सही नहीं है।" उन्होंने उत्तर दिया।

"आप क्या है?" मैंने दबी हँसी के बीच कहा, "आप कोई मोटरकार हैं जो आउट ऑफ स्पिन हो गई है?"

वे समझ नहीं पाईं कि मैं गंभीर था या मज़ाक कर रहा था, वे थोड़ा असहज भाव से मुस्कुराईं। मैं मज़ाक नहीं कर रहा था, हालाँकि कुछ सैकेंड के लिए मैं चुपचाप हँसा। दरअसल, मुझे उनकी अज्ञानता पर अफ़सोस भी हुआ, कि उन जैसे सभी साधकों के साथ ऐसा ही होता है, जो अक्सर 'चक्र विशेषज्ञों' की बातों के जाल में आ जाते हैं।

"तो, इसके अलावा उन्होंने और क्या बताया?" मैंने पूछा

"उन्होंने कहा है कि मुझे चक्र वाला लॉकेट गले में पहनना चाहिए और एक ख़ास तरह की धूप-अगरबत्ती जलानी चाहिए।"

"ठीक, उससे क्या होगा?"

"फिर मेरे चक्रों का संतुलन बन जाएगा।" फिर उन्होंने मुझे दिखाने के लिए लॉकेट बाहर निकाला। जो कि काफ़ी महँगा दिख रहा था। सफ़ेद रंग के सोने से बनी चार कमल पंखुड़ियों के बीच एक बड़ा सा नग जड़ा था और पंखुड़ियों पर पन्ने, माणिक्य, दूधिया पत्थर व पुखराज़ जड़े हुए थे। "उनके अनुसार इसे मेरे हृदय को स्पर्श करना चाहिए।"

"यह आपके हृदय को स्पर्श तो कर रहा है, पर यह इससे ज़्यादा आपके लिए कुछ नहीं कर रहा। क्या मैं ठीक कह रहा हूँ?"